Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER-TET

Uttar Pradesh Basic Education Board

भाग – 6

विद्यालय प्रबन्धन एवं सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

SUPER TET - 2022

CONTENTS

	विद्यालय प्रबन्धन एवं सामान्य ज्ञान	
1.	विद्यालय प्रबन्धन	1
2.	भौतिक संसाधनों का प्रबन्धन	4
3.	मानवीय संसाधनों का प्रबन्धन	10
4.	वित्तिय प्रबन्धन	14
5.	शैक्षणिक प्रबन्धन	16
6.	समय–तालिका प्रबन्धन	21
7.	आपदा प्रबन्धन	26
8.	विद्यालय के प्रबन्धन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका	33
9.	प्रारम्भिक शिक्षा के विकास हेतु अभिकरण	40
10.	प्राथमिक शिक्षा का आधारभूत ढॉचा	49
	इतिहास	
1.	प्राचीन इतिहास	54
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	56
3.	वैदिक काल (साहित्य)	62
4.	जैन व बौद्ध धर्म	66
5.	महाजनपद काल	73
6.	विदेशी आक्रमण	74
7.	मौर्य काल	75
8.	मौर्योत्तरकाल	82
9.	गुप्त काल	85
10.	गुप्तोतर काल	95

मध्यकालीन भारत

11. मुगलकाल 98
12. भक्ति एवं सूफी आन्दोलन 104
13. मराठा उद्‌भव 116

आधुनिक भारत का इतिहास

14. मराठा शक्ति का उत्कर्ष 117
15. अंग्रेजो की भू–राजस्व पद्धतियॉ 118
16. आंग्ल–मैसूर सघर्ष 119
17. आग्ंल–सिक्ख सघर्ष 120
18. गवर्नर जनरल 121
19. भारत के वायसराय 123
20. 1857 की क्रान्ति 126
21. धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन 129
22. महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आन्दोलन 132

राजव्यवस्था

23. अम्बेडकर एवं भारतीय संविधान का निर्माण व विशेषताएँ 144
24. अनुसूचियॉ 150
25. राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति 153
26. प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद 164
27. संसद 167
28. उच्चतम व उच्च न्यायालय 179
29. राज्य 186
30. आपातकालीन उपबंध 189
31. संविधान संशोधन 192
32. भारतीय राज्यव्यवस्था से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण 194

विविध

33.	भारत के प्रमुख बांध की सूची	203
34.	भारत के पक्षी अभ्यारण	204
35.	भारत की जनसंख्या	204
36.	भारत के प्रमुख बन्दरगाह	205
37.	भारत के प्रमुख नृत्य	206
38.	भारत के प्रमुख स्टेडियम	207
39.	प्रमुख व्यक्ति एवं उनके उपनाम	208
40.	भारत के प्रमुख स्थल एवं उनके निर्माणकर्ता	209
41.	राज्य एवं उनके मुख्यमंत्री	210
42.	भारत के राष्ट्रपति	210
43.	भारत के प्रधानमंत्री	211
44.	लोकसभा अध्यक्ष	211
45.	नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीय	212
46.	केन्द्रीय मंत्रीपरिषद	213
47.	भारत के सर्वाधिक बडा, लम्बा एवं ऊँचा	215
48.	भारत के प्रथम पुरूष	216
49.	यूनेस्को द्वारा घोषित भारत स्थित विश्व धरोहर	218

भारतीय भूगोल

1.	भारत का विस्तार	220
2.	भारत के भौगोलिक भू–भाग	225
3.	भारत का अपवाह तंत्र	254
4.	जैव–विविधता	269
5.	भारत के बायोस्फीयर रिजर्व	273
6.	भारत की मिट्टी/मृदा	275
7.	जलवायु	280
8.	भारत में खनिजों का वितरण	281
9.	भारत के प्रमुख उद्योग	284

10.	परिवहन	287
11.	कृषि	296
12.	भारत में निवास करने वाली जनजातियॉ	303
13.	भौतिक भूगोल	305
14.	पृथ्वी का वायुमण्डल	308
15.	विश्व भूगोल के महत्त्वपूर्ण तथ्य	309
16.	पर्यावरण	318
17.	यातायात व सड़क सुरक्षा	327

1 विद्यालय प्रबन्धन

शिक्षा प्रबन्धन

संगठन व्यक्तियों का एक समूह होता है जिसके निश्चित उद्देश्य होते हैं उन्हें प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इन संगठनों को निर्देशित, समन्वित तथा एकीकृत करने के लिए 'प्रबन्धन' की आवश्यकता होती है। प्रबन्धन का सरल शब्दों में 'अर्थ' संगठन में व्यक्तियों से कार्य करना है।

प्रबन्धन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Management)

प्रबन्धन की कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं—

''एक संगठन में कार्यरत व्यक्तियों के प्रयासों से निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए नियोजन, निर्देशन एवं समन्वित करने को प्रबन्धन कहते हैं।''

''प्रबन्धन मानवीय एवं भौतिक साधनों की उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समन्वय करना है।''

''प्रबन्धन वह है जो एक प्रबन्धक सम्पादन करता है।''

लारेन्स ए० एप्ले के अनुसार, ''प्रबन्धक क्रियाओं का नियोजन तथा निर्देशन ही नहीं, अपितु मनुष्यों का विकास करता है।''

प्रबन्धन की विशेषताएँ (Characteristics of Management)

प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. प्रबन्धन व्यक्तियों से कार्य कराने की कला तथा विज्ञान है।
2. इसमें व्यक्तियों तथा कार्यकर्त्ताओं से समूह में संगठित रूप में कार्य कराया जाता है तथा सामूहिक क्रियाओं को बढ़ावा दिया जाता है।
3. प्रबन्धन को कार्य कराने की ज्ञान की एक शाखा अथवा अनुशासन माना जाता है।
4. प्रबन्धन पर्यावरण को बनाए रखने तथा उसे बनाने का कार्य करता है।
5. प्रबन्धन को मानव विकास की प्रक्रिया भी मानते हैं।

प्रबन्धन की प्रकृति (Nature of Management)

प्रबन्धन की प्रकृति बदलती रहती है। पहले 'प्रबन्धन' तथा 'स्वामित्व' को एक ही अर्थ में प्रयुक्त करते थे परन्तु आज तकनीकी एवं औद्योगिक युग में इनके अर्थ एवं प्रकृति भिन्न हैं। प्रबन्धन की प्रकृति इस प्रकार है—

1. प्रबन्धन एक कला तथा विज्ञान है और एक अध्ययन का क्षेत्र भी है।
2. प्रबन्धन व्यक्तियों से कार्य कराने की सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
3. प्रबन्धन व्यक्तियों के संगठित समूह से कार्य कराने का एक तंत्र है।
4. प्रबन्धन एक व्यवसाय/पेशा है तथा इसकी अपनी आचार-संहिता है।
5. प्रबन्धन पर्यावरण की गुणवत्ता बनाए रखने का कार्य है।

विद्यालय प्रबन्धन

एक सफल एवं प्रभावशाली विद्यालय प्रबन्धन की अनेक विशेषताएँ होती हैं। यहाँ प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया गया है वे इस प्रकार हैं—

1. विद्यालय प्रबन्धन में लचीलापन (Flexibility)
2. विद्यालय प्रबन्धन की व्यावहारिकता (Practicability)
3. विद्यालय प्रबन्धन का प्रारूप समाज, राष्ट्र, राजनीति तथा दर्शन के अनुरूप
4. विद्यालय प्रबन्धन की सक्षमता (Efficiency)
5. अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति (Achievement of Desired Aims)

विद्यालय प्रबन्धन की आवश्यकता एवं महत्त्व (Needs & Importance of School Management)

विद्यालय में प्रबन्धन की आवश्यकता एवं इनके महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है—

1. विद्यालय प्रबन्धन के द्वारा विद्यालय के लिए उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग किया जाता है तथा अन्य आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की जाती है।
2. विद्यालय प्रबन्धन के द्वारा विद्यालय एवं बालकों के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ निर्मित की जाती हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास का सृजन होता है।
3. विद्यालय प्रबन्धन द्वारा समस्त कर्मचारियों के उत्तरदायित्वों का विभाजन किया जाता है, जिससे प्रत्येक कर्मचारी अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए विद्यालय विकास में सहयोग करता है।
4. विद्यालयों के सफल संचालन में विद्यालय प्रबन्धन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि इसके अभाव में विद्यालय का प्रभावपूर्ण संचालन सम्भव नहीं है।
5. विद्यालय प्रबन्धन में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्य-सामग्री क्रियाओं को संचालित किया जाता है, जिससे कि छात्रों का शारीरिक एवं मानसिक विकास सम्भव हो पाता है।

विद्यालय प्रबन्धन के उद्देश्य (Objectives of School Management)

विद्यालय प्रबन्धन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. समाज की बुनियादी परम्पराओं तथा मूल्यों का संरक्षण करना।
2. भविष्य में शिक्षा का संचालन करना।
3. सामाजिक परिवर्तनों का प्रबन्धन करना।
4. अनुभवों द्वारा छात्रों का विकास करना।
5. आधुनिकीकरण का विकास तथा संचालन करना।
6. विज्ञान प्रसार करना।
7. तकनीकी विकास को अपनाना।
8. राष्ट्रीय एकता की अनुभूति कराना।
9. चरित्र का निर्माण करना।
10. व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना।

विद्यालय प्रबन्धन के अधिनियम (Principles of School Management)

भारत संसार का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। इसकी सफलता के लिए हमें विद्यालय प्रबन्धन की समीक्षा तथा अवलोकन करना होगा, विद्यालय प्रबन्धन में सुधार करके प्रोत्साहन भी देना होगा। इसके लिए विद्यालय प्रबन्धन को निम्नांकित अधिनियमों का अनुसरण करना होगा—

1. शिक्षा का प्रजातांत्रिक दर्शन होना।
2. योग्यता एवं क्षमताओं के विकास की स्वतंत्रता होना।
3. शिक्षा की प्रक्रिया छात्र-केन्द्रित होना।
4. विद्यालय प्रबन्धन उद्देश्य-केन्द्रित होना।
5. लचीलापन, अनुकूलन तथा स्थायित्व होना।

बहुविकलपीय प्रश्न

1. विद्यालय संगठन का मुख्य कार्य है—
(अ) समय सारणी बनाना (ब) शिक्षा नियोजना (स) प्रवेश परीक्षा (द) उपरोक्त सभी

2. शिक्षा प्रशासन की मुख्य प्रक्रिया है—
(अ) निर्देशन देना (ब) बजट बनाना (स) नियुक्तियाँ करना (द) उपरोक्त सभी

विद्यालय प्रबन्धन

3. शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का क्षेत्र है—
(अ) प्रबन्धन का (ब) विद्यालय संगठन (स) नियोजन का (द) शिक्षा प्रशासन

4. विद्यालय प्रबन्धन का उत्तरदायित्व होता है—
(अ) प्रबन्धक (ब) प्राचार्य (स) शिक्षक (द) सभी का

5. विद्यालय प्रबन्धन की विशेषता होती है—
(अ) व्यावहारिकता (ब) लचीलापन (स) उद्देश्य-केन्द्रित होना (द) उपरोक्त सभी

उत्तरमाला

1. (द) **2.** (द) **3.** (स) **4.** (ब) **5.** (द)

मौर्य काल

- 326 ई पू. मे यूनानी सेनापति सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया। इस समय मगध में नन्द वंश का शासक था।
- सिकन्दर के आक्रमण के कारण उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त में अराजकता फैल गयी। जिसकी जानकारी देने तक्षशिला का आचार्य विष्णुगुप्त घनाu न्द के दरबार में आया था।
- घनानन्द ने चाणक्य को अपमानित किया। जिसके बाद चाणक्य ने नन्द वंश के समूल विनाश की प्रतिज्ञा की।
- चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को एक शिकारी से 1000 कर्षापण में खरीदा।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- पुराणों में मौर्यों को शुद्र कहा गया है।
- विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य को कुशल अर्थात् निम्नकुल का कहा है।
- यूनानी लेखकों ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य को निम्न परिस्थितियों में उत्पन्न माना है।
- वास्तव में मौर्य पिपलीवन (नेपाल) के क्षत्रिय थे तथा मोरों को पालने के कारण मौर्य कहलाए थे।
- सर्वप्रथम ग्रेनवेडेल ने बताया था कि मोर मौर्य का वंर्षीय चिन्ह था। जबकि राजकीय चिह्न सिंह था।
- यूनानी लेखकों में चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए निम्न नामों का उल्लेख किया।
- स्ट्रेबो व जस्टिन ने सैण्ड्रोकोटस
  एरियन व प्लूटार्क ने एण्ड्रोकोटस
  फिलारकस ने सैण्ड्रोकोप्टस
- सर्वप्रथम विलियम जोंस ने यह मत दिया कि यूनानी साहित्य में उल्लेखित यह व्यक्ति चन्द्रगुप्त मौर्य है।
- चन्द्रगुप्त ने मद्र देश (पंजाब) से विद्रोह का प्रारम्भ किया जिसे शीघ्र ही दबा दिया गया।
- इसके बाद यूनानी क्षेत्रों पर से आक्रमण करके चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध पर अधिकार किया।
- जस्टिन ने चन्द्रगुप्त की सेना को डाकूओं की सेना कहा।
- प्लूटार्क ने लिखा की चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना लेकर पूरे जम्बूदीप को रोंद डाला था।
- 305 ई.पू. मे चन्द्रगुप्त मौर्य का सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस से युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रगुप्त विजय रहा।
- सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त से किया व 4 प्रान्त दहेज के रूप में दिये।
  1. ऐरिया–हेरात
  2. पेरिपेमिसई–काबुल
  3. अराकोसिया–कंधार
  4. जेण्ड्रोसिया–ब्लूचिस्तान
- सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को दूत बनाकर चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था।
- चन्द्रगुप्त के दक्षिणी भारत के विजय की जानकारी अहनानूर व मूरनानूर नामक ग्रंथों से मिलती हैं।
- संगम कालीन कवि मामूलनार ने भी चन्द्रगुप्त के दक्षिण विजय की जानकारी दी।
- चन्द्रगुप्त ने अंतिम दिनों मे जैन धर्म अपना लिया था।
- जैन आचार्य भद्रबाहु के साथ कर्नाटक में स्थित स्वर्ण बेलगोला चले गये तथा अपना नाम बदलकर विशाखाचार्य रख लिया था।
- यहाँ स्थित चन्द्र पहाड़ी पर सल्लेखना पद्धति से अपने प्राण त्याग दिये।

- चन्द्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र प्रान्त के गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने प्लासिनी व स्वर्ण सिक्ता नदियों के पानी को रोककर सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।
- **विलसेट ऑर्थर स्मिथ–** चन्द्रगुप्त के उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था जो अंग्रेज भी प्राप्त नहीं कर पाये थे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित दो ताम्र पत्र महास्थान (बांग्लादेश, सोहगौरा (उ.प्र.) से प्राप्त हुआ है।
- महास्थान से चन्द्रगुप्त की बंगाल विजय की पुष्टि होती है। इसके अलावा इससे अकाल नीति व कांकणी नाम ताम्र मुद्रा का भी उल्लेख है।
- जैन ग्रंथ परिशिष्ट पर्वन में लिखा है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के समय 12 वर्षों तक भीषण अकाल पड़ा था।

बिन्दुसार 298 ई.पू. से 273 ई.पू. तक

- माता – दुर्धरा
- पिता – चन्द्रगुप्त मौर्य

उपाधियाँ

- यूनानी साहित्य में – अमित्रोकेटस (शत्रुओं का नाशक)
- जैन ग्रंथों में – सिंहसेन
- वायु पुराण में – भद्रसार
- चाणक्य कुछ समय बिन्दुसार के काल में भी प्रधानमंत्री रहा।
- चाणक्य के बाद खल्लाटक प्रधानमंत्री बना तथा ऐसा लिखा कि बिन्दुसार के दरबार में 500 मंत्रियों की एक परिषद् थी जिसका संचालन खल्लाटक किया करता था।
- खल्लाटक के बाद राधागुप्त प्रधानमंत्री बना।
- स्ट्रेबों ने लिखा है कि सीरिया के शासक एण्टयोकस प्रथम ने डायमेकस को दूत बनाकर बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
- बिन्दुसार ने डायमेकस से तीन चीजों की माँग की– मदिरा, सुखी अंजीर तथा दार्शनिक।
- डायमेकस व बिन्दुसार के मध्य हुई चर्चा का उल्लेख एथीनियस के द्वारा किया गया।
- प्लिनी ने लिखा कि मिश्र के शासक रॉलमी– II ने डायनेसियस को दूत बनाकर भेजा।
- बिन्दुसार के दरबार मे आजीवक सम्प्रदाय के आचार्य पिगलवत्स रहा करते थे।
- पिगलवत्स के द्वारा भविष्यवाणी की गयी कि अशोक मगध का शासक होगा।
- बिन्दुसार ने पुत्र सुसीम को तक्षशीला तथा अशोक को उज्जैनिया का प्रान्तपति नियुक्त किया।
- तक्षशीला में हुए विद्रोह को दबाने के लिए बिन्दुसार ने अशोक को भेजा।

सम्राट अशोक –273 ई.पू. से 232 ई.पू.

- अशोक प्रधानमंत्री राधागुप्त की सहायता से शासक बना।
- अशोक को चार साल अपने 99 भाइयों के विद्रोह को दबाने में लगे।
- इस कारण अशोक का राज्याभिषेक 269 ई.पू. में हुआ।
- अशोक के अभिलेखों में जिन घटनाओं का उल्लेख है वो उनके राज्याभिषेक की तिथि से ही किया गया है।
- अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी अथवा धर्मा था।
- दक्षिणी साहित्यों में अषोक की माता का नाम जनपद कल्याणी प्राप्त होता है। यह चम्पा (पूर्वी बिहार) के ब्राह्मण की पुत्री थी।
- अशोक की जानकारी के प्रमुख स्त्रोत –

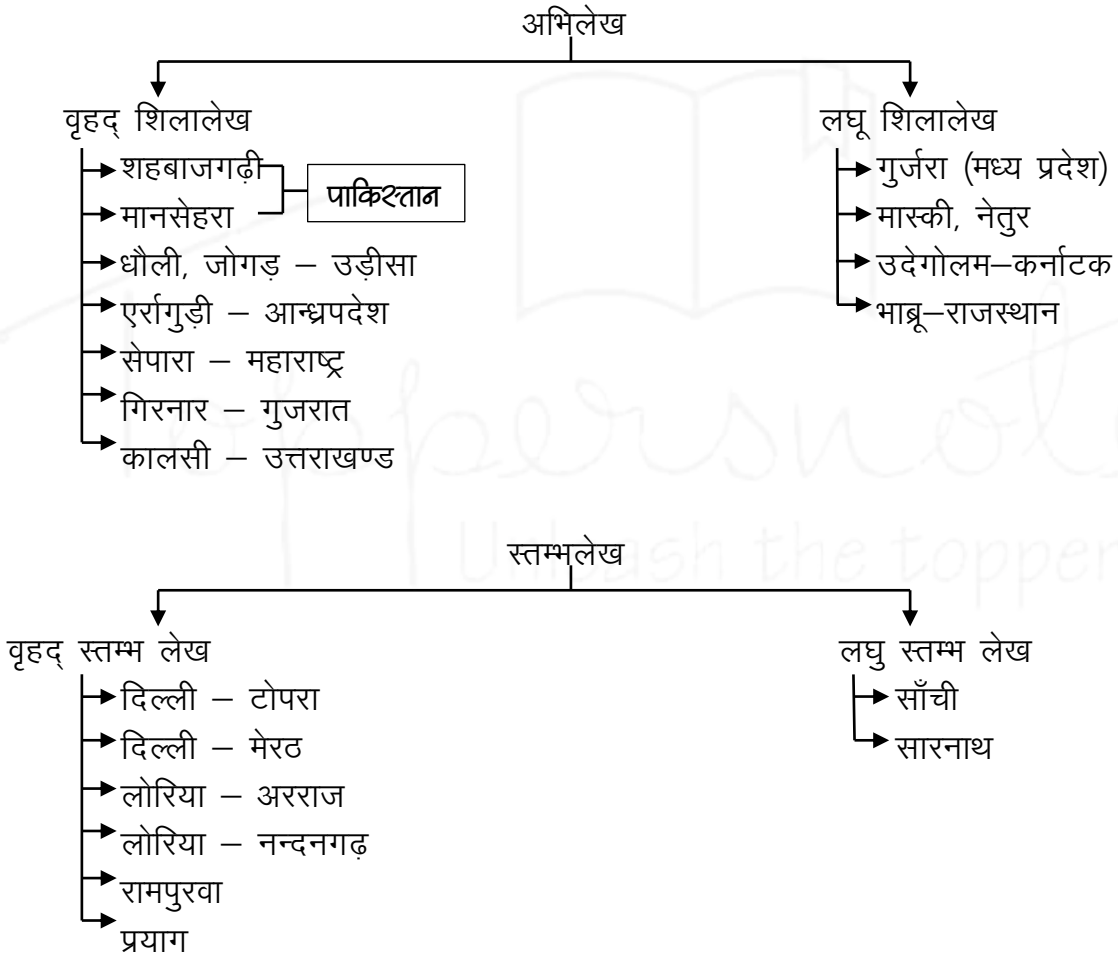

गुहालेख

- सुदामा, कर्ण चौपार, विश्व झोपड़ी।
- अशोक के अभिलेखों से उसके प्रशासन व उसके धम्म उसके निजी जीवन के बारें में जानकारी मिलती हैं।
- 1750 में टिफेन्थेलर के द्वारा अशोक के दिल्ली – मेरठ स्तम्भ लेख को खोजा गया।
- 1837 में जेम्स प्रिंसेप के द्वारा दिल्ली – टोपरा स्तम्भ लेख को पढ़ा गया।
- अशोक के अभिलेखों की भाषा – प्राकृत है।
- लिपि – ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक, अरेमाइक है।

- अधिकांश स्तम्भों की लिपि ब्राह्मी हैं।
- शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा से प्राप्त अभिलेखों की लिपि खरोष्ठी है।
- तक्षशिला से प्राप्त अभिलेख अरेमाइक लिपि में है।
- कांधार से प्राप्त शर–ए–कुना अभिलेख यूनानी व अरेमाइक लिपि में है जो द्विभाषीय अभिलेख है।

वृहद् शिलालेख

- इन शिलालेखों से अशोक के प्रशासन की जानकारी मिलती है। ये वृहद् शिलालेख 8 विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- जिनमें राज्य की 14 आज्ञाऐं दी गयी है।
- धौली, जोगड़ शिलालेखों में 11, 12, 13 नम्बर का लेख नहीं है। इसके स्थान पर दो अलग लेख उत्कीर्ण है।

1. **प्रथम वृहद् शिलालेख**
   इसमें अशोक ने सामाजिक उत्सवों व पशु बली प्रथा के निषेध का उल्लेख किया।
2. **दूसरा वृहद् शिलालेख**
   इसमे अशोक ने अपने सीमान्त राज्यों चोल, पांड्य, केरलपुत का उल्लेख किया। चिकित्सालय बनवाने का उल्लेख किया है।
3. **तीसरा वृहद् शिलालेख**
   इसमें अशोक ने युक्त, रज्जुक व प्रादेशिक नामक अधिकारियों को आदेश दिया है कि वे राज्य का दौरा करें।
4. **पाँचवाँ वृहद् शिलालेख**
   इसमें अशोक ने अपने शासन के 13वें वर्ष धम्म महामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की।
5. **आठवाँ वृहद् शिलालेख**
   इसमें लिखा है कि अशोक ने 10 वे वर्ष धम्म यात्राएँ निकालने का आदेश दिया।
6. **ग्यारहवाँ (11वाँ) वृहद् शिलालेख**
   धम्म दान व मंत्रिपरिषद् का उल्लेख।
7. बारहवाँ (12वाँ) वृहद् शिलालेख
   इसे धार्मिक सहिश्णुता का षिलालेख कहा जाता है।
8. **तेरहवाँ (13वाँ) वृहद शिलालेख**
   इसमें अशोक के शासन काल के 8वें वर्ष पश्चात् 261 ई.पू. में कलिंग विजय का उल्लेख है, विदेश नीति का उल्लेख मिलता है।
   खारवेल हाथिगुम्फा अभिलेख में कलिंग के शासक का नाम नन्दराज मिलता है।

लघु शिलालेख

- मास्की, नेतुर, उदयगोलम (कर्नाटक) तथा गुर्जरा (म.प्र.) में अशोक का नाम अशोक मौर्य प्राप्त होता है।
- मास्की लघु शिलालेख में अशोक को बुद्ध शाक्य कहा गया है।
- भाब्रू शिलालेख को त्रिरत्न शिलालेख कहा जाता है। क्योंकि अशोक इसके माध्यम से त्रिरत्न बुद्ध, धम्म, संघ के प्रति आस्था प्रकट करता है।

स्तम्भ लेख

- वृहद् स्तम्भ लेख–इन लेखों की संख्या– 7 है जो भिन्न 6 स्थानों से प्राप्त हुए है।
- दूसरे व सातवें स्तम्भ लेख के धम्म की जानकारी मिलती है।
- अशोक ने धम्म की परिभाषा राहूलोवाद सूत से ली है।
- दिल्ली–टोपरा स्तम्भ लेख को सुनहरी लाट, भीमलाट, फिरोजशाह लाट व शिवालिक लाट भी कहा जाता है।

लघु स्तम्भ लेख

सारनाथ का स्तम्भ लेख

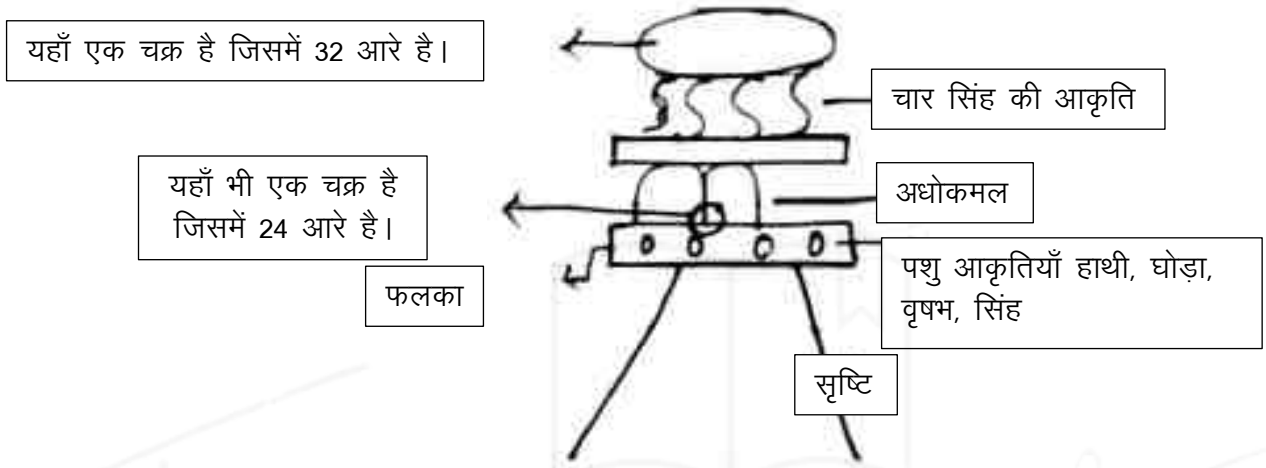

नोट– साँची स्तम्भ लेख में 4 सिंहों के नीचे दाना चुगते हुए हंस की आकृति है।

गुहा लेख

- अशोक ने बिहार स्थित बराबर की पहाड़ियों में आजीवक सम्प्रदाय के लिए सुदामा, कर्ण चौपार व विश्व झोपड़ी नामक गुफाओं का निर्माण करवाया।
- अशोक के पौत्र दशरथ में बिहार में स्थित नागार्जुनी पहाड़ी में आजीवक सम्प्रदाय के लिए निम्न गुफाओं का निर्माण करवाया।
- गोपी, लोमर्षि, वडथिका आदि।
- नेपाल की तराई में स्थित रूम्मनदेई स्तम्भ लेख अशोक की अर्थव्यवस्था से संबंधित है। अशोक अपने शासन के 20वें वर्ष लुम्बिनी गया और यहाँ से लिया जाने वाला बलि नामक धार्मिक कर माफ कर देता है।
- भू–राजस्व की राशि घटाकर 1/6 से 1/8 भाग कर देता है।

अन्य अभिलेख

पानगोरारिया

इस अभिलेख में अशोक को महाराजकुमार कहा गया है।

रूद्रदामन का जूनागढ अभिलेख से सुदर्शन झील की जानकारी मिलती है।

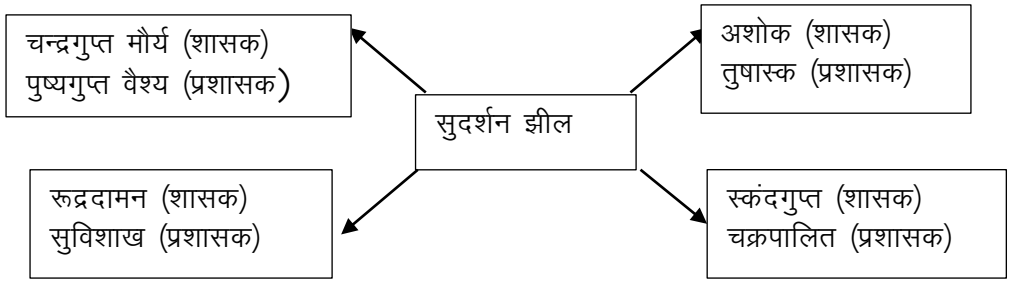

जुनागढ़ अभिलेख के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य सुदर्शन झील का निर्माता था।

मेगस्थनीज

सेल्यूकस निकेटर का राजदूत चन्द्रगुप्त मौर्य के समय।

पुस्तक – इंडिका

इंडिका की असत्य बातें –

1. भारत में दास प्रथा नही
2. भारत में अकाल नहीं पड़ते
3. मौर्य काल में 7 प्रकार की जातियाँ
4. भारतीयों को लेखन कला की जानकारी नहीं

मेगस्थनीज उत्तरापथ का उल्लेख करता है। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में उत्तरापथ का निर्माण हुआ। ब्रिटिश काल में ऑकलैण्ड के समय इसे ग्राण्ड ट्रंक रोड नाम दिया।

कौटिल्य की पुस्तक अर्थशास्त्र

भाषा – संस्कृत

भाग–1

1909 में श्यामशास्त्री द्वारा इसका प्रकाशन किया गया।

अर्थशास्त्र में सातवें अधिकरण ''मण्डल योनी'' राज्य के सप्तांग सिद्धान्त का उल्लेख करता है।

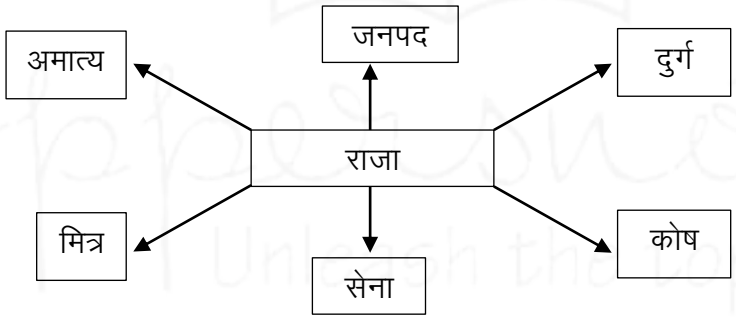

- अर्थशास्त्र में किसी भी मौर्य शासक का नाम उल्लेख नहीं है।
- इस ग्रंथ में मौर्य की राजधानी पाटलीपुत्र का भी उल्लेख नहीं है।
- अर्थशास्त्र के अनुसार भू–राजस्व 1/6 भाग लिया जाना चाहिए।
- अर्थशास्त्र में 9 प्रकार के दासों का उल्लेख है।
- दक्षिणापथ के बारें में जानकारी अर्थशास्त्र से प्राप्त होती है।
- मौर्यकालीन राजभवन – इण्डिका में पाटलीपुत्र के लिए पोलीब्रोथा शब्द का प्रयोग किया गया है। पाटलीपुत्र गंगा व सोन नदी के संगम पर स्थित था।
- मौर्य कालीन राजभवनों को प्रकाश में लाने का श्रेय स्पूनर महोदय को जाता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में लकड़ी के द्वारा इन भवनों का निर्माण किया गया जिसके साक्ष्य बिहार के बुलंदीबाग व कुम्रहार नामक स्थान से प्राप्त होते है।

स्तूप

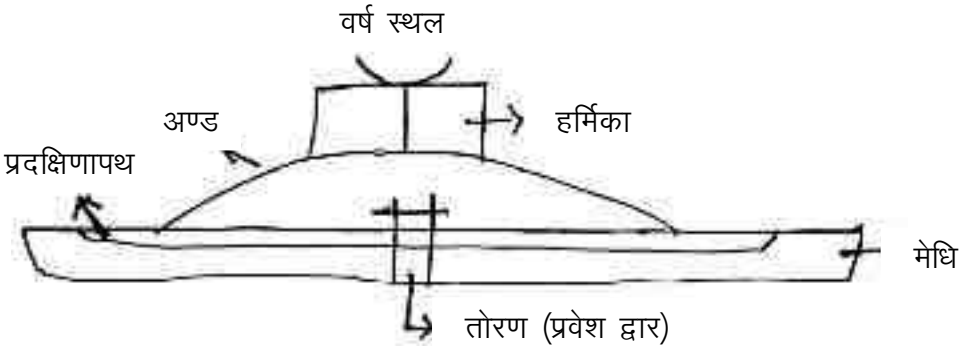

हर्मिका

स्तूप का सबसे पवित्र भाग है महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद उनसे संबंधित अवशेषों को जिस स्थान पर रखा गया वह समाधि स्थल स्तूप कहलाये।

अशोक के काल में लगभग 84000 स्तूपों का निर्माण हुआ।

लोककला

- इसे लोकाश्रयी भी कहा गया क्योंकि यह कला आजीविका के लिए प्रयोग में ली जाती थी। यक्ष–यक्षिणी की मूर्तियाँ बनायी गई। पटना के दीदारगंज, मध्य प्रदेश के विदिशा नामक स्थान से ये मूर्तियाँ प्राप्त हुई है।

कौशाम्बी (उ.प्र.) से प्राप्त स्तम्भ लेख को रानी का अभिलेख कहा जाता है।

पिपहरवा (नेपाल) का स्तूप सबसे प्राचीन स्तूप है।

अमरावती का स्तूप सबसे बड़ा स्तूप है।

अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था।

अशोक के काल में तीसरी बौद्ध संगीती हुई।

अशोक को उपगुप्त ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

अशोक के मृत्यु के पश्चात् कुणाल शासक बना था।

अशोक के काल में कश्मीर में श्रीनगर तथा नेपाल में देवपतन नामक नगर की स्थापना हुई।

भारत के भौगोलिक भू–भाग

(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू–भाग

इसे मुख्यतः 5 भौतिक भागों मे बाँटा है जो निम्न है –

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तरी मैदानी प्रदेश
3. प्रायद्वीप पठारी प्रदेश
4. तटीय मैदानी प्रदेश
5. द्वीपीय समूह प्रदेश

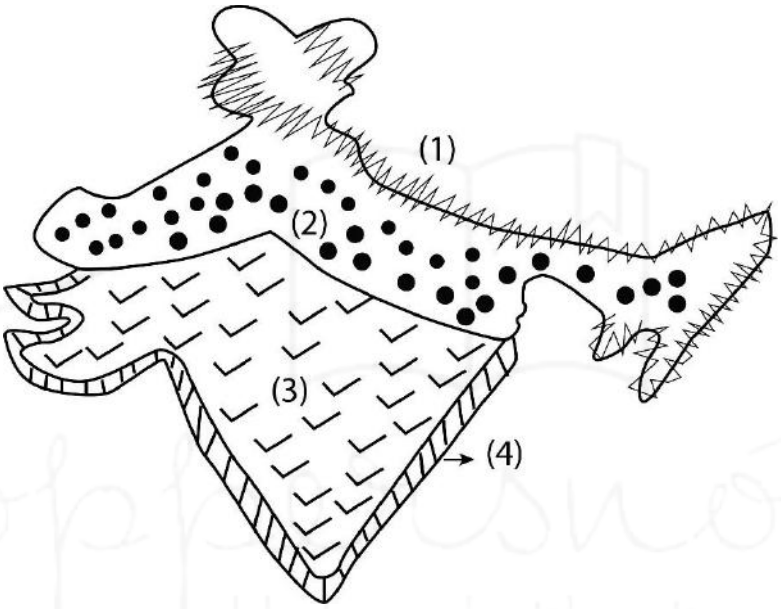

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश

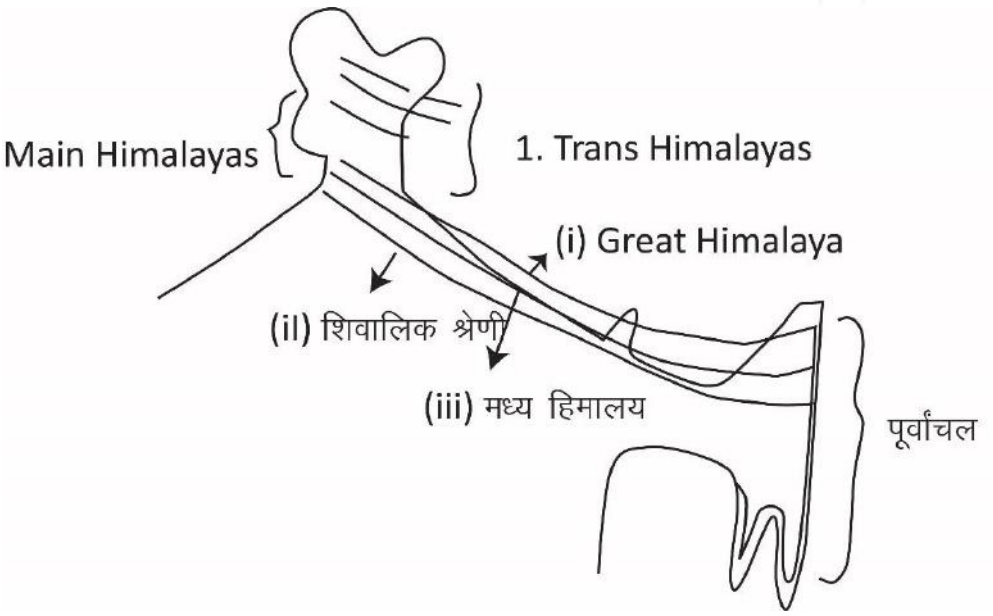

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण टर्शरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

ट्रांस हिमालय

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है :–

(a) काराकोरम श्रेणी

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी कहलाती है ।
- यह ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है :–
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन
- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) लद्दाख श्रेणी

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'एकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है । जो विश्व की सबसे तीव्रतम ढाल वाली चोटी है ।

(c) जास्कर श्रेणी

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note

लद्दाख पठार

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार है ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

मुख्य हिमालय

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ है:-
  - (a) वृहद् हिमालय (Greater Himalaya)
  - (b) मध्य हिमालय (Middle Himalaya)
  - (c) शिवालिक (Shivalik)

(a). वृहद् हिमालय (Greater Himalaya)

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी तक विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एवं औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट की वर्तमान ऊँचाई 0.86 मीटर बढने के कारण 8848.46 हो गई है ।
- इस श्रेणी मे कंचनजंघा (8598 मी.), मकालू (8484 मी.) धौलागिरी (8172 मी.), नंगा पर्वत (8126 मी.) आदि स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान इत्यादि ।
- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।

- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रे निम्न है :-

➢ बुर्जिल	➢ नीति
➢ जोजीला	➢ लिपुलेख
➢ बडालाचा	➢ नाथुला
➢ शिपकीला	➢ जेलेप्ला
➢ माना	➢ बोमडीला

(i). बुजल दरा
- यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से घुरूपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). जोजिला दर्रा
- यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
- इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बाडालाचा दर्रा – यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्रा
- यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
- इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना :- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). नीति :- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). लिपुलेख दर्रा
- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्रा
- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।

- इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
- मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जेलेप–ला दर्रा :– यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). बोमडीला दर्रा :– यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). मध्य हिमालय (Middle Himalaya)

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैः–
  - जम्मू कश्मीर – पीरपंजाल
  - हिमाचल प्रदेश – धौलाधर
  - उत्तराखण्ड – मसूरी/नागटिब्बा
  - नेपाल – महाभारत
  - सिक्किम – डोकया
  - भूटान – ब्लैक माउण्टेन
- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैः–
  - कश्मीर घाटी = वृहद् हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहद् हिमालय – धौलाधर
  - कांगडा घाटी **(HP)** = वृहद् हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहद् हिमालय – महाभारत
- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे **'मर्ग'** तथा उत्तराखण्ड मे **'बुग्याल, पयार'** कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते है ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी आदि ।
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है :–
  1. पीरपंजाल दर्रा :– यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
  2. बनिहाल दर्रा :– श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

ऋतु प्रवास (Transhumance)

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते हैं ।, उसे ऋतु प्रवास कहा जाता है ।
- जम्मू–कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते है ।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते है ।

करेवा (Karewa)

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते है ।
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** है । इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

(C). शिवालिक (Shivalik)

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–
  - जम्मू कश्मीर – जम्मू हिल्स
  - उत्तराखण्ड – दूधवा/धांग (दूदवा/धांग)
  - नेपाल – (चूडियाघाट)
  - आंध्रप्रदेश (दाफला)
  - **Miri** (मिरी)
  - **Abhor** (अबोर)
  - **Mishmi** (मिश्मी)
- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था ।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गईं जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते है । उदाहरण :– देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार इत्यादि ।
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos)

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते हैं ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

(D). पूर्वांचल (Purvanchal)

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाडियों को पूर्वांचल कहते हैं ।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ।
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाडियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह स्थान विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित है ।
- नागा पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है ।
- मिजो पहाडियों को लुसाई पहाडियाँ भी कहते है ।
- मिजो पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है ।
- बराइल श्रेणी नागा पहाडियों एवं मणिपुर पहाडियों को अलग करती है ।